8

अन्यजातियों में पौलुस की व्यक्तिगत सेवकाई

(3:1–7)

मसीह की महिमामय कलीसिया के लिए परमेश्वर की मंशा प्रकट किए गए भेद के रूप में ठहराई गई थी। अध्याय 3 में पौलुस ने भेद के प्रकट होने (3:1–7), भेद की समझ (3:8–13) और परमेश्वर के मसीही लोगों की कलीसिया की प्रकट की गई मंशा को पूरा करने में सहायता के लिए उसकी प्रार्थना (3:14–21) की बात की।

अन्यजातियों के लिए मसीह का बन्धुआ (3:1)

[1]इसी कारण मैं पौलुस जो तुम अन्यजातियों के लिए मसीह यीशु का बन्धुआ हूं।

आयत 1. आयत 1 में **इसी कारण** और आयत 14 में "इसी कारण" के बीच पौलुस ने अन्यजातियों के बीच अपनी सेवकाई के लिए अपने पाठकों को याद दिलाते हुए कोष्ठक वाला भाग डाल दिया। चाहे यह स्पष्ट था कि पौलुस यहूदी श्रोताओं के बीच प्रचार करता था पर उसके काम का मुख्य फोकस अन्यजातियों के बीच में था। इसी काम के लिए परमेश्वर ने उसे विशेष रूप में बुलाया था (देखें प्रेरितों 9:15; 13:46; 18:6; 22:21; 28:28; गलातियों 2:2)। पौलुस का विषयांतर दो भागों में है (3:1–7 और 3:8–13)। (3:1–7 के समानांतर के लिए, देखें कुलुस्सियों 1:23–29.)

पौलुस ने अपने आपको **मसीह का बन्धुआ** (*desmios*) बताया। इसका अर्थ यह हो सकता है कि वह अपने आपको पाप की दासता से छुड़ाए हुए और यीशु के साथ पूर्ण निष्ठा से मसीह के गुलाम के रूप में देखता था। पौलुस आम तौर पर अपने आपको मसीह का "दास" कहता था (देखें रोमियों 1:1; गलातियों 1:10; फिलिप्पियों 1:1; कुलुस्सियों 1:7; तीतुस 1:1)। अनुवादित शब्द "दास" का यूनानी शब्द *doulos* है और इसका अर्थ है "गुलाम ... जिसकी इच्छा और क्षमताएं पूरी तरह से किसी दूसरे की सेवा में हैं।"[1] परन्तु यह सम्भावना अधिक है कि पौलुस ने यहां पर "बन्धुआ" का इस्तेमाल इस तथ्य के लिए किया कि इस पत्र को लिखे जाने के समय वह दो पहले कारावासों के लिए बंदी था। वह "मसीह का बन्धुआ" इस अर्थ में था कि वह मसीह की खातिर कैद में था। मसीह ने यह प्रकट किया था कि पौलुस उसके नाम के लिए कई बातें सहेगा (प्रेरितों 9:16)। बाद में पौलुस ने कहा, "हम चारों ओर से क्लेश को भोगते हैं ... सर्वदा यीशु के कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं" (2 कुरिन्थियों 4:8–11)। 2 कुरिन्थियों 6:4, 5 में उसने उन "क्लेशों, संकटों, कोड़े खाने और कैद होने की बात की जो

उसने मसीह की खातिर सहे'' थे।

तुम अन्यजातियों के लिए इस तथ्य को याद दिलाता था कि पौलुस का काम मुख्यतया अन्यजातियों में प्रचार करने का था। उसे सुसमाचार का प्रचार करने के कारण जेल में डाला गया था। इस कारण वह ''अन्यजातियों के लिए'' जेल में था। उसके कष्ट अन्यजातियों की भलाई के लिए थे, क्योंकि बिना उन कठिनाइयों के सुसमाचार कभी नहीं मिल सकता था। फिलिप्पियों 1:12-14 में पौलुस ने उस भलाई की बात की, जो उसके जेल जाने से मिलनी थी। इफिसियों 3:13 में उसने कहा कि अन्यजातियों की ओर से उसका दुख सहना उनकी ''महिमा'' था।

अन्यजातियों के लिए परमेश्वर के अनुग्रह का भण्डारी (3:2)

[2]यदि तुम ने परमेश्वर के उस अनुग्रह के प्रबन्ध का समाचार सुना हो, जो तुम्हारे लिए मुझे दिया गया।

आयत 2. यदि *ei ge* का अनुवाद है और ''उस की मान्यता है, जिसे मान लिया जाता है।''[2] पौलुस इस बात से परिचित था कि इफिसुस के लोगों ने सुसमाचार का संदेश **सुना** था क्योंकि उसने उन्हें इसे सुनाया था। इसलिए उसने मान लिया कि चाहे उसे उन्हें देखे चार साल के लगभग बीत गए थे,[3] पर उन्हें याद है कि उसने उन्हें क्या बताया था।

प्रबन्ध (*oikonomia*) का इस्तेमाल पौलुस द्वारा 1:10 में किया गया था जहां इसका अनुवाद NASB में ''प्रबन्ध'' और NKJV में ''प्रबन्ध'' हुआ है। वहां पर पौलुस परमेश्वर के अपनी सनातन योजना के प्रबन्ध की बात करता है; पर 3:2 में उसके मन में प्रबन्ध करने या प्रचार करने, अन्यजातियों में **परमेश्वर के अनुग्रह** की व्यक्तिगत जिम्मेदारी है। पौलुस को स्वयं भी मसीही बनने और प्रचारक बनने में परमेश्वर का अनुग्रह मिला था (देखें 3:8)। उसकी ज़िम्मेदारी भण्डारीपन में प्रबन्ध करने, निगरानी करने, किसी दूसरे की सम्पत्ति का प्रबन्ध करने की थी।[4] पौलुस परमेश्वर के अनुग्रह का भण्डारी था जो उस सुसमाचार में दिया गया जिसका प्रचार उसने किया।

यूनानी धर्मशास्त्र में यहां अनुवाद हुआ वाक्य **जो तुम्हारे लिए मुझे दिया गया।** ''भण्डारीपन'' के बजाय सुधरकर ''अनुग्रह'' है।[5] इस आयत की समझ यह है कि पौलुस को परमेश्वर के अनुग्रह का भण्डारी बनाया गया था। उसे यह अनुग्रह मिला था और अब वह सुसमाचार को अन्यजातियों के पास ले जाते हुए उन्हें प्रचार करने की ज़िम्मेदारी के अधीन था।

प्रकट किए गए भेद का प्राप्तकर्त्ता (3:3-6)

[3]अर्थात यह कि वह भेद मुझ पर प्रकाशन के द्वारा प्रकट हुआ, जैसे मैं पहिले संक्षेप में लिख चुका हूं। [4]जिस से तुम पढ़कर जान सकते हो, कि मैं मसीह का वह भेद कहां तक समझता हूं। [5]जो और और समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं पर प्रकट किया गया है। [6]अर्थात यह, कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं।

आयत 3. पौलुस ने पुष्टि की कि अन्यजातियों में जिस अनुग्रह के संदेश का प्रचार उसने किया था, उसे वह परमेश्वर की ओर से मिला था। **प्रकाशन** के लिए यूनानी शब्द (*apokalupsis*) का अर्थ है ''खोलना,''[6] जबकि **भेद** (*mustērion*) का अनुवाद है (1:9 पर टिप्पणियां देखें)। पौलुस कह रहा था कि परमेश्वर की सनातन मंशा, जिसमें अन्यजाति शामिल थे, एक भेद थी। यह मंशा खोए जाने या प्रकट किए जाने तक परमेश्वर का रहस्य था। पौलुस इस खोले जाने का प्राप्तकर्त्ता था यानी उसने परमेश्वर की ओर से मिले प्रकाशन के द्वारा इस संदेश को पाया था, जिसका उसने प्रचार किया था। **मैं पहले संक्षेप में लिख चुका हूं** अवश्य ही इफिसियों के इस पत्र में लिखी उसकी बातें है, जो सीधे तौर पर भेद और अन्यजातियों के लिए थीं (देखें 1:9, 10; 2:11–22)।

आयत 4. यह **भेद** ऐसा नहीं था जिसे समझा न जा सके। पौलुस चाहता था कि इफिसुस के लोग समझ के साथ **पढ़** लें। उसे जो पौलुस ने परमेश्वर की मंशा के बारे में इस पत्र में पहले कहा था पढ़ने और अन्य जातियों के शामिल होने की बात पढ़कर उन्होंने **जान** जाना था कि वह **मसीह** के भेद को पूरी तरह से **समझता** है। यह वह भेद था जो बहुत देर तक छिपा रहा परन्तु अन्त में प्रकाशन के द्वारा इसे प्रकट कर दिया गया था।

आयत 5. मसीह के आने के पहले के सभी वर्षों में, परमेश्वर की सनातन मंशा छिपी हुई थी और इस कारण यह एक भेद था। पुराने नियम के नबियों ने बार–बार रहस्य के रूप में थोड़ा–थोड़ा इस पर बात की थी पर उन्हें भी पूरी तरह से समझ नहीं थी कि वे क्या लिख रहे हैं। 1 पतरस 1:10–12 में पतरस ने कहा:

> ... उन भविष्यवक्ताओं ने बहुत ढूंढ़–ढांढ़ और जांच–पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर *होने को था,* भविष्यवाणी की थी। उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उनमें था, और पहिले ही से मसीह के दुखों की और उनके बाद होने वाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था। उन पर प्रकट किया गया, कि वे अपनी नहीं वरन तुम्हारी सेवा के लिए ये बातें कहा करते थे, जिनका समाचार अब तुम्हें उनके द्वारा मिला, जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गया: तुम्हें सुसमाचार सुनाया, और इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं।

बाद में पतरस ने 2 पतरस 1:19–21 में पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के परमेश्वर की प्रेरणा से होने की पुष्टि की। देखें ''और अध्ययन के लिए: पुराने नियम के भविष्यवक्ता और परमेश्वर की मंशा।''

पौलुस के अनुसार परमेश्वर की बातों को **आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं पर प्रकट किया गया है**। ध्यान दिया जाना चाहिए कि आत्मा के द्वारा ''आत्मा में'' भी हो सकता है। जैसा कि NASB की कुछ मुद्रणों की टिप्पणी में दिया गया है। क्योंकि यूनानी उपसर्ग का अर्थ *''में, ऊपर, पर, के साथ, के द्वारा, के बीच''* है।[7] ''प्रेरणा'' बिल्कुल वही है यानी ''आत्मा के द्वारा'' प्रकट किया गया संदेश। ''प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं'' यहां नये नियम के प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के लिए है (2:20 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 5 में तीन अन्तर दिखाई देते हैं: **नहीं बताया गया था**/प्रकट किया गया; **और समयों में**/''अब''; **मनुष्यों की संतानों**/''पवित्र प्रेरितों ओर भविष्यवक्ताओं।'' अपने आत्मा के द्वारा परमेश्वर के हस्तक्षेप के बिना उसकी सनातन मंशा एक भेद ही बनी रहनी थी (छुपी रहती), परन्तु अब प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के परमेश्वर के प्रकाशन के द्वारा हम परमेश्वर के मन की बात का जान सकते हैं।

आयत 6. परमेश्वर की मंशा के भेद की बात करने के बाद पौलुस ने इसे स्पष्ट बता दिया। **अन्यजाति लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा** [ओं] **के भागी हैं** बना दिए गए; ये बड़ी आशिषें अब केवल यहूदियों के लिए नहीं थी। अन्यजाति लोग परमेश्वर की संतान, मसीह की देह के अंग और हर उस प्रतिज्ञा के पाने वाले हो सकते हैं परमेश्वर ने मसीह के द्वारा की है। **अर्थात यह** को NASB में तिरछा करके लिखा गया है जो यह संकेत देता है कि मूल धर्मशास्त्र में ये शब्द नहीं थे, परन्तु इन्हें स्पष्ट करने के लिए अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है। यह कहकर कि अन्यजाति **हैं,** पौलुस ने वर्तमान भावार्थक संज्ञा *einai* (''होना'') का इस्तेमाल किया,[8] जो ''निरन्तर या बार बार होने वाले कार्य से सम्बन्धित है, बिना किसी संकेत के कि यह कार्य कब होगा।''[9] इसके अलावा क्रिया शब्द कर्मवाच्य में है जो इस बात का संकेत है कि ''कर्त्ता क्रिया के कार्य को ग्रहण कर रहा है।'' इस कारण पौलुस किसी बात को समझा रहा था जब परमेश्वर ने अन्यजातियों और यहूदियों दोनों को ''संगी वारिस और देह के संगी सदस्य, और सुसमाचार के द्वारा मसीह यीशु में प्रतिज्ञा के संगी भागीदार'' बनाने के लिए कार्य किया। वह समय तब था जब यीशु क्रूस पर मरा (2:13-22)।

एंड्रयू टी. लिंकोन ने एक दिलचस्प टिप्पणी दी है जिसे अंग्रेजी के पाठक आसानी से नज़रअन्दाज कर सकते हैं। आयत 6 में तीन यूनानी विशेषण हैं-*sunklēronoma* (''संगी वारिस''), *sussōma* (''संगी सदस्य''), और *summetocha* (''संगी भागीदार'') जिनमें प्रत्येक का आरम्भ उपसर्ग *sun* (''के साथ'') के एक रूप से होता है। यह शब्द परमेश्वर के भेद को मसीह की देह में अन्यजातियों के शामिल होने के रूप में बताते हैं। अन्यजाति मसीही लोगों के यहूदी विश्वासियों के साथ सम्बन्ध को समझाने के लिए पहले ऐसे ही शब्दों का इस्तेमाल हुआ है। 2:19 में पौलुस ने उन्हें ''संगी स्वदेशी'' (*sumpolitai*) कहा, 2:21 कहा कि वे ''एक साथ मिल गए'' (*sunarmologeō*) और 2:22 में उन्हें ''एक साथ बनाए जाने'' (*sunoikodomeō*) के रूप में वर्णित किया। उसका ज़ोर यहूदियों के साथ कालांतर में अन्यजातियों के सम्बन्ध पर इतना नहीं था जितना अन्यजाति मसीहियों और यहूदी मसीहियों के बीच ''एक नया मनुष्य,'' ''एक देह'' (देखें 2:15, 16), ''कलीसिया'' (देखें 1:22, 23) के रूप में कहा। उसने दिखाया कि अन्जाति मसीही मनुष्यता के महत्व के व्यवहार को कलीसिया में यहूदी और अन्यजाति मसीहियों में कोई अन्तर नहीं था और मसीह का नया समुदाय यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को परमेश्वर तक सामान रूप से पहुंचाता है।

> यह विशेषकर तीन विशेषणों में से दो से निकलता है जिसका प्रमाण समय के साहित्य में और कहीं नहीं है और इस कारण यह वह शब्द हो सकता है जिसे लेखक ने इसी अवसर के लिए चुना। ... अन्यजातियों को किसी ऐसी चीज़ में नहीं मिलाया गया

जो पहले से थी; वे समान रूप में संगी सदस्य हैं, जो कि देह के जीवन के लिए पूरी तरह आवश्यक है। ...[11]

मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा पौलुस का यह कहने का ढंग था कि अन्यजाति लोग किस प्रकार से संगी वारिस, संगी सदस्य और संगी साझीकार बनें। अन्यजातियों में सुसमाचार के सुनाए जाने पर उन्होंने इसे आज्ञाकारी विश्वास में माना तो वे मसीह में आ गए (देखें गलातियों 3:26, 27) और यहूदियों के साथ समान सदस्य बन गए जो मसीह में थे।

सुसमाचार का एक सेवक (3:7)

7और मैं परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार, जो उसकी सामर्थ के प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया, उस सुसमाचार का सेवक बना।

आयत 7. अनुवादित शब्द **सेवक** का यूनानी संज्ञा शब्द *diakonos* है जिसका अर्थ वह व्यक्ति है जो "सेवा करता" है।[12] यह प्रचारक के सम्बन्ध में नहीं, चाहे बेशक पौलुस एक प्रचारक था, बल्कि इस तथ्य से जुड़ा है कि पौलुस परमेश्वर और दूसरों की परमेश्वर के भेद अर्थात सुसमाचार को सुनाते हुए सेवा करता है। पौलुस का मानना था कि **परमेश्वर का अनुग्रह** उस तक उद्धार को लाने के लिए पहुंचा है (1 तीमुथियुस 1:12-17)। उसे इस बात की समझ थी कि परमेश्वर ने उसे उस योग्य बनाया जो वह मसीह में बना था (1 कुरिन्थियों 15:10) और परमेश्वर के अनुग्रह से ही वह सुसमाचार का प्रचार कर सकता था (देखें 3:2)।

सुसमाचार जो पौलुस को बदलने, उसे सुसमाचार देने और उसे प्रेरित और सुसमाचार का प्रचारक बनाने के लिए दिया गया **उस की सामर्थ के प्रभाव के अनुसार** था। पौलुस अन्यजातियों प्रेरित अपनी सामर्थ से नहीं, बल्कि परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा बना था।

पौलुस ने मसीह के मुर्दों में से जी उठने, परमेश्वर के दाहिने हाथ उसके ऊंचा किए जाने, और कलीसिया का सिर बनाया जाने की बात में परमेश्वर की सामर्थ की बात की (1:19-23)। उसी सामर्थ से पौलुस सुसमाचार में परमेश्वर का सेवक बना था।

और अध्ययन के लिए:
पुराने नियम के भविष्यवक्ता और परमेश्वर की मंशा

2 पतरस 1:19-21 में पतरस ने पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के भाग को अंधकार में चमकती ज्योति से मिलाया। भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर की मंशा की बात की थी परन्तु केवल भविष्यवाणी में और थोड़ा-थोड़ा करके। जब मसीह आया तो यह दिन के निकलने की तरह था। परन्तु पतरस ने कहा कि वे भविष्यवक्ता वैसा ही बोलते थे जैसे "पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे" जाते थे (2 पतरस 1:21)। अनुवादित शब्द "उभारे" के लिए यूनानी क्रिया शब्द (*pherō*) का अर्थ "ले जाना, साथ उठाना" है।[13] इस प्रकार पतरस ने इस बात की पुष्टि की कि पुराने नियम भविष्यवक्ताओं को परमेश्वर की प्रेरणा मिली थी, चाहे "प्रेरणा" नये नियम का शब्द है। 2 तीमुथियुस 3:16 में इस अवधारणा के लिए हमें यूनानी शब्द *theopneustos* मिलता है। फ्रीड-हार्डमैन कॉलेज (अब विश्वविद्यालय) के प्रोफ़ेसर फ्रेंक वे डाइट ने "प्रेरणा"

की परिभाषा ''मनुष्यों में परमेश्वर के श्वास डालने, उन्हें प्राप्त करने के योग्य बनाने और बिना त्रुटी के ईश्वरीय सच्चाई बताने'' के रूप में की है। पतरस ने यही दावा किया पुराने नियम के भविष्यवक्ता आत्मा की प्रेरणा के द्वारा बोलते थे। यह बात ''व्याख्या'' (*epilusis*) को पटपटा बना देती है। हमें पतरस से *hermēneia*[14] का इस्तेमाल ''व्याख्या'' का अर्थ देने की हो सकती है।[15] यदि उसके मन में पवित्र शास्त्र की व्याख्या की बात हो। पौलुस पवित्र शास्त्र की व्याख्या की बात नहीं कर रहा था; बल्कि वह तो दिखा रहा था कि पवित्र शास्त्र परमेश्वर की ओर से दिया गया है। पवित्र शास्त्र मनुष्य की ओर से नहीं है, बल्कि वह परमेश्वर की ओर से है। जैसा 1:21 में पतरस ने कहा, ''... कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई।''

पतरस ने दिखाया कि चाहे वे परमेश्वर की ओर से बात करते थे पर पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को उन संदेशों की जिन्हें वे लिखते थे पूरी समझ नहीं थी। उनके बहुत से लेख उन लोगों के लिए थे, जिन्होंने बाद में आना था। पतरस यह लिखते हुए कि ''इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं'' (1 पतरस 1:12)। अपने पाठकों को याद दिलाता था कि मसीह में परमेश्वर की मंशा की इसके बाद में ''आत्मा के द्वारा उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं पर प्रकट'' किए जाने तक न तो मनुष्यों को इसका ज्ञान था और न ही स्वर्गदूतों को (इफिसियों 3:5)।

प्रासंगिकता

भेद प्रकट किया गया (अध्याय 3)

इफिसियों 3 एक भेद के प्रकट होने की बात है। परमेश्वर के पास सदा से एक योजना थी। परमेश्वर द्वारा इसे प्रकट किए जाने तक यह योजना एक भेद थी क्योंकि न तो इसका किसी मनुष्य से और न ही स्वर्गदूत को पता था। इस योजना के प्रकट हो जाने के बाद, अब यह ''भेद'' नहीं बल्कि ''प्रकाशन'' बन गई है।

परमेश्वर की योजना (3:3-5)। परमेश्वर की सनातन योजना एक भेद थी क्योंकि ''और और समयों में [यह] मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था'' (3:5)। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को परमेश्वर की योजना का अर्थ मालूम नहीं था चाहे उन्होंने इसके भविष्य में होने की बात कही थी (देखें 1 पतरस 1:10-12)। स्वर्गदूतों को परमेश्वर की योजना की समझ नहीं थी चाहे उनकी इसे देखने की बड़ी इच्छा थी (देखें 1 पतरस 1:12)।

परमेश्वर की योजना प्रकट की गई (3:6-9)। पौलुस ने इस बात की पुष्टि की कि परमेश्वर की योजना एक बार प्रकट हो जाने के बाद अब भेद नहीं होगी। पौलुस ने कहा कि वह परमेश्वर की अनुग्रहकारी योजना का इस बात में भण्डारी था कि यह योजना पवित्र आत्मा के द्वारा अन्य प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के साथ साथ उसके ऊपर प्रकट की गई थी। भेद जो प्रकट किया गया था इसमें मसीह में परमेश्वर की योजना, कलीसिया का कार्य और यह तथ्य था कि अन्यजातियों को शामिल कर लिया गया है।

परमेश्वर की योजना और कलीसिया (3:10-21)। ''परमेश्वर का ज्ञान'' (3:10) परमेश्वर की वह गुप्त योजना है जिसे अब प्रकट कर दिया गया है। परमेश्वर का ''ज्ञान'' जो कि

उसकी ''सनातन मंशा है'' (3:11) में यह तथ्य था कि कलीसिया इसे सारे संसार को बताए। इसका अर्थ यह है कि कलीसिया सदा से परमेश्वर के मन में थी।

परमेश्वर द्वारा दिए गए अपने मिशन में सफल होने के लिए कलीसिया को परमेश्वर की आशिषों की आवश्यकता है। पौलुस ने प्रार्थना की कि परमेश्वर कलीसिया को योग्य बनाए (3:14-19)। पहले तो उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर कलीसिया को अपने काम के लिए मज़बूती दे। दूसरा, उसने प्रार्थना की कि मसीह कलीसिया के लोगों के मनों में वास करे ताकि वे बेहतर ढंग से समझ पाएं और प्रेम से प्रेरित हों। तीसरा, उसने प्रार्थना की कि वे परमेश्वर की परिपूर्णता से परिपूर्ण हो जाएं।

अपनी प्रार्थना के उत्तर के बारे में पौलुस बड़ा आश्वस्त लगा क्योंकि परमेश्वर के पास ''जो कुछ हम मानते या सोचते हैं'' उससे कहीं अधिक करने की सामर्थ है। परमेश्वर ने कलीसिया को अपना मिशन पूरा करने की योग्य बनाना था। तीसरा पौलुस चाहता था कि कलीसिया सदा सदा के लिए परमेश्वर की महिमा करे (3:20, 21)।

परमेश्वर की सदा से एक योजना रही है और उस योजना में हम सब शामिल हैं। यह योजना परमेश्वर के ''प्रकाशन के द्वारा'' प्रकट किए जाने तक एक ''भेद'' थी। परमेश्वर के प्रकाशन में वह सब बातें हैं जो मसीह के बलिदान और कलीसिया की स्थापना के द्वारा हमारे लिए उसके मन में हैं। हम परमेश्वर के प्रकाशन और इससे मिलने वाली आशिषों के पाने वाले हैं। इस कारण हमें वह सब करने के लिए प्रेरित होना चाहिए, जो परमेश्वर चाहता है कि हम करें।

जे लॉकहर्ट

टिप्पणियां

[1]एथलबर्ट डब्ल्यू. बुलिंगर, *ए क्रिटिकल लैक्सिकन एंड कन्कोर्डेंस टू द इंग्लिश एंड ग्रीक न्यू टैस्टामैंट* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, 1975), 683. [2]द *एक्सपोज़िटर'स ग्रीक टैस्टामेंट,* संपा. डब्ल्यू-रॉबर्टसन निकोल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 3:302 में एस. डी. एफ. सैलमण्ड, ''द एपिस्टल टू द इफिसियंस।'' [3]फ्रैंक जे. गुडविन, *ए हारमनी ऑफ द लाइफ ऑफ़ सेंट पॉल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1951; रिप्रिंट, ऐन आर्बर, मिशिगन: कुशिंग-मेलॉय, 1973), 87, 149. [4]केन्नथ एस. वुएस्ट, *वुएस्ट'स वर्ड स्टडीज़ फ्रॉम द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर द इंग्लिश रीडर: इफिसियंस एंड कोलोसियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1953), 44. [5]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990), 174. [6]वुएस्ट, 81. [7]सी. जी. विल्के एंड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. एवं संशो. जोसेफ हेनरी थेयर (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 209. [8]एल्फ्रड मार्शल, *द इंटरलीनियर NASB-NIV पैरेलल न्यू टैस्टामेंट इन ग्रीक एंड इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1993), 561. [9]स्पायरस जोडिएट्स, सम्पा., *द कम्पलीट वर्ड स्टडी न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (चटनूगा, टैनिसी: एएमजी पब्लिशर्स, 1992), 869. [10]लिंकोन, 180.

[11]वही, 180-81. [12]वुएस्ट, 83. [13]बुलिंगर, 510. [14]इस शब्द के रूप यूहन्ना 1:38, 42; 9:7; 1 कुरिन्थियों 12:10; 14:26; इब्रानियों 7:2 में ''अनुवादित,'' ''अनुवाद,'' और ''व्याख्या।'' [15]बुलिंगर, 416.